

# डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट लिटरेचर, व्याख्यान 28, इब्रानियों

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं, इब्रानियों की पुस्तक पर व्याख्यान 28।

ठीक है, अब शुरू करने का समय आ गया है।

बस घोषणा के कुछ शब्द। उनमें से एक रेड सॉक्स के सभी प्रशंसकों के प्रति मेरी सहानुभूति है। मुझे स्वीकार करना होगा, मैं सेंट लुइस कार्डिनल का प्रशंसक हूँ और वे कुछ भी बेहतर नहीं कर रहे हैं, इसलिए मैं समझता हूँ।

दूसरा, आज रात 8 बजे इस कमरे में एक अतिरिक्त क्रेडिट समीक्षा सत्र है, इसलिए आएं और प्रश्न लेकर आएं, परीक्षा से संबंधित किसी भी चीज़ के बारे में बात करने के लिए तैयार रहें। और फिर, यह अतिरिक्त क्रेडिट के लिए है। बस एक बार फिर आपको याद दिला दूँ कि आपको कितने सत्रों के लिए अतिरिक्त क्रेडिट की राशि मिलती है।

उनमें से चार होंगे, इसलिए यदि आप केवल एक को दिखाते हैं, तो आपको उसका श्रेय मिलेगा। यदि आप चार तक पहुंचते हैं, तो जाहिर है कि यह आपके अंतिम ग्रेड को और भी अधिक अच्छे के लिए प्रभावित करेगा, इसलिए जितना अधिक उतना बेहतर। लेकिन आज रात 8 बजे, हम इस कमरे में, अतिरिक्त क्रेडिट समीक्षा सत्र करेंगे।

पिछली परीक्षा का ग्रेड, आपको वह शुक्रवार तक मिल जाना चाहिए, मुझे उम्मीद है, हाँ। वे सभी वर्गीकृत हैं, बस उनकी गणना करने की आवश्यकता है। मैं आमतौर पर अपने टीए द्वारा उन्हें ब्लैकबोर्ड पर रखने से पहले उन्हें देखता हूँ, इसलिए वे उसके पास गए हैं और उम्मीद है कि शुक्रवार तक वे ब्लैकबोर्ड पर आ जाएंगे।

हाँ, अच्छा. ठीक है, और मैंने ईमेल भी किया था, उम्मीद है, आपको अध्ययन गाइड संलग्न एक ईमेल मिला होगा। जैसा कि मैंने कहा, मैं एक को ब्लैकबोर्ड पर रखने का प्रयास कर रहा हूँ।

किसी कारण से, मेरे कंप्यूटर ने मुझे पूरे दिन ब्लैकबोर्ड पर नहीं जाने दिया। मुझे यकीन नहीं है कि क्यों, लेकिन जैसे ही मैं इसमें शामिल हो जाऊंगा, मैं इसे ब्लैकबोर्ड पर भी डाल दूंगा। लेकिन आपके पास उस ईमेल पर एक अनुलग्नक होना चाहिए जो मैंने आज सुबह एक अध्ययन मार्गदर्शिका के रूप में भेजा है।

इसलिए, यदि आप आज रात समीक्षा सत्र में आ रहे हैं, तो हो सकता है कि आप उसे डाउनलोड करना चाहें या उसकी एक प्रति अपने पास रखना चाहें।

ठीक है, आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें। और फिर हमने सोमवार को इब्रानियों की पुस्तक को देखना शुरू किया, और हम आज उसे समाप्त करने का प्रयास करेंगे।

और जैसा कि मैंने कहा, शुक्रवार को परीक्षा संख्या तीन है जिसमें इब्रानियों में कुछ भी शामिल नहीं है। यह पौलुस के अंतिम पत्रों के रूप में तीतुस के माध्यम से जाता है जिस पर हमने विचार किया। और इस प्रकार, तीतुस के माध्यम से इफिसियों, फिलेमोन को कुलुस्सियों के साथ वहां फेंक दिया गया।

ठीक है, आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें। पिता, हम आपके पुत्र यीशु मसीह के रूप में आपके रहस्योद्घाटन के उपहार के लिए आभारी हैं। लेकिन जैसा कि हमने पहले कहा है, धर्मग्रंथ ईसा मसीह की गवाही देते हैं और बताते हैं कि उन्होंने हमारे लिए क्या किया है और आज्ञाकारिता में उनका अनुसरण करने और इस दुनिया में भगवान के लोगों के रूप में जीवन जीने का क्या मतलब है। इसलिए, हम आपका मार्गदर्शन चाहते हैं क्योंकि हम इब्रानियों की पुस्तक के रूप में उस रहस्योद्घाटन के एक हिस्से पर विचार करते हैं, हमें ज्ञान और अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, और हमें उस पुस्तक के महत्व को समझने में मदद करते हैं, न कि केवल इस संदर्भ में कि पहले पाठक कैसे होंगे इसे प्राप्त किया है और इसे समझा है, लेकिन आज आप चाहते हैं कि हम आपके लोगों के रूप में इसका जवाब कैसे दें। यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

ठीक है, ठीक है, हमने इब्रानियों की पुस्तक को देखना शुरू कर दिया, और मैंने आपको सुझाव दिया कि इब्रानियों को मूल रूप से यहूदी ईसाई पाठकों को मनाने की कोशिश करने के लिए लिखा गया था, जिनके बारे में लेखक को शायद संदेह है कि उन्होंने अभी तक पूरी तरह से मसीह और इस नई वाचा के मोक्ष और विश्वास को नहीं अपनाया है। , लेकिन अब कुछ समय के लिए उन्होंने अपने पैतृक धर्म, यहूदी धर्म में वापस जाने का प्रयास किया है, और ऐसा करने पर उन्होंने यीशु मसीह और इस नई वाचा के उद्धार से मुंह मोड़ लिया है जो यीशु प्रदान करते हैं।

लेखक पूरी किताब में यीशु मसीह की तुलना पुराने नियम के विभिन्न संस्थानों और व्यक्तियों से करने की कोशिश करता है, पुराने नियम में, लेखक यह प्रदर्शित करना चाहता है कि यीशु श्रेष्ठ है क्योंकि वह पूर्णता लाता है, वह एक लाता है चरमोत्कर्ष ईश्वर का रहस्योद्घाटन जो मूल रूप से पुरानी वाचा के धर्मग्रंथों के माध्यम से प्रकट हुआ था, लेकिन यीशु मसीह को श्रेष्ठ दिखाकर, ईश्वर के रहस्योद्घाटन के श्रेष्ठ साधन, लेखक अपने पाठकों को फिर से उस वाक्यांश का उपयोग करने के लिए प्रेरित करने की कोशिश कर रहा है जिसका मैंने अक्सर उपयोग किया है, उन्हें यह दिखाने के लिए कि यदि वे वापस जाते हैं तो उनके पास खोने के लिए सब कुछ है और यदि वे विश्वास के साथ मसीह को गले लगाते हैं और आगे बढ़ते हैं तो उनके पास पाने के लिए सब कुछ है, चाहे इसकी कोई भी कीमत क्यों न हो। इसलिए फिर से, जब आप इब्रानियों को पढ़ते हैं, तो लेखक अपने पाठकों को यह प्रदर्शित करने के लिए व्याख्या और उपदेश को वैकल्पिक करता है कि यीशु मसीह मूसा से श्रेष्ठ है, वह पुराने नियम के कानून से श्रेष्ठ है, वह पुराने नियम के तम्बू और मंदिर से श्रेष्ठ है, वह से श्रेष्ठ है पुरानी वाचा, बलिदान प्रणाली के लिए, यह प्रदर्शित करके कि यीशु श्रेष्ठ है क्योंकि वह उन्हें पूरा करता है, फिर वह, लेखक अपने पाठकों को यह समझाने की उम्मीद कर रहा है कि वे उस चीज़ पर वापस क्यों जाना चाहेंगे जो अब बड़े पैमाने पर पूरी हो गई

है यीशु मसीह का व्यक्तित्व. इसलिए, यदि वे उससे मुंह मोड़ लेते हैं तो उनके पास खोने के लिए सब कुछ है, और यदि वे आगे बढ़ते हैं और मसीह को गले लगाते हैं तो उनके पास पाने के लिए भी सब कुछ है।

मैंने कहा कि यह शायद ऐसा है मानो पाठक यीशु मसीह को गले लगाने और सुसमाचार में विश्वास करने और यहूदी धर्म में अपनी पूर्व धार्मिक प्रणाली में वापस जाने के बीच लड़खड़ा रहे हों। शायद कठिनाई का एक हिस्सा यह था कि ईसाई धर्म और यहूदी धर्म के बीच की रेखाएं इस समय कुछ हद तक धुंधली हो गई होंगी, इसलिए फिर से, लेखक को संदेह है कि इन पाठकों ने यीशु मसीह और सुसमाचार में पूर्ण विश्वास में परिवर्तन नहीं किया होगा, और अब वे वापस जाने के विभिन्न कारणों से खतरे में हैं। और इसलिए, लेखक, हमने देखा कि लेखक पुराने नियम से ही तर्क देता है, कि पुराने नियम ने पुरानी वाचा की अस्थायी प्रकृति की ओर इशारा किया था।

इसने एक बड़ी पूर्ति की ओर इशारा किया जो आने वाली थी, और अब लेखक आश्चर्य है कि यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूर्ति हुई है, और पाठक इसे अपने जोखिम पर अनदेखा करते हैं। अब, अगले भाग को मैं इस बात के प्रदर्शन के रूप में देखना चाहता हूँ कि लेखक क्या कर रहा है वह इब्रानियों अध्याय 3 और 4 है। इब्रानियों अध्याय 3 और 4 में, लेखक, फिर से, अपने पाठकों को यहूदी धर्म में वापस न लौटने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा है, और ऐसा करने में, यीशु मसीह और सुसमाचार से मुंह मोड़कर, उन्हें समझाने की कोशिश में, लेखक इस्राएलियों के बीच तुलना या सादृश्य स्थापित करता है, लेकिन एक विशिष्ट अवधि के दौरान। वह आपको पुराने नियम के संपूर्ण इतिहास का सर्वेक्षण या विस्तृत विवरण नहीं देता है, बल्कि वह उस पर ध्यान केंद्रित करता है।

दिलचस्प बात यह है कि इब्रानियों के लेखक ने इज़राइल के इतिहास के एक पहलू पर ध्यान केंद्रित किया है, और वह जंगल की पीढ़ी है, वह पीढ़ी जो मिस्र छोड़कर कनान देश में आई थी, वह भूमि जिसे ईश्वर ने उन्हें लाने का वादा किया था। लेकिन अगर आपको यह कहानी याद है कि कैसे उन्होंने 12 जासूस भेजे थे, और यहोशू और कालेब ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो वापस आए और लोगों को भगवान के वादे के अनुसार अंदर जाने और भूमि लेने के लिए प्रोत्साहित किया, लेकिन लोग विश्वास करने में विफल रहे, और उन्होंने भगवान की अवज्ञा की। और उस देश में जाने से इन्कार किया, और इस कारण परमेश्वर ने उनका न्याय किया। वे मूल रूप से उस पीढ़ी को खत्म करने के लिए 40 वर्षों तक जंगल में भटकते रहे, जब तक कि एक नई पीढ़ी जोशुआ के अधीन नहीं आ गई।

लेकिन निर्गमन में मिस्र छोड़ने और वादा किए गए देश तक जाने के बीच की वह अवधि, जहां यहोशू और कालेब की रिपोर्ट और सकारात्मक प्रोत्साहन के बावजूद, इस्राएलियों ने अंदर जाने से इन्कार कर दिया, वह अवधि वह अवधि है जिसके लेखक इब्रानियों पर ध्यान केंद्रित है। और वह इसे एक मॉडल के रूप में, या एक सादृश्य के रूप में उपयोग करता है, जो कुछ इस तरह चलता है। वह जंगल में परमेश्वर के पुराने वाचा के लोगों की तुलना करता है, जिन्होंने फिर से जंगल के माध्यम से मिस्र से बाहर, वादा किए गए देश तक यात्रा की, और जिनके लिए तम्बू रास्ते में उनके साथ था।

याद रखें, तम्बू एक पोर्टेबल मंदिर की तरह है। तम्बू वह स्थान है जहाँ परमेश्वर अपने लोगों से मिलते थे, और जब उन्हें हिलने की आवश्यकता होती तो वे इसे तोड़ सकते थे, और फिर इसे वापस स्थापित कर सकते थे, और यहीं पर परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहते थे। बाद में, उसे एक अधिक स्थायी संरचना, मंदिर द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा।

लेकिन लेखक फिर से, लेखक अपनी नई वाचा के लोगों की तुलना करता है जो इस चर्च से संबंधित हैं जिसे वह संबोधित कर रहा है, शायद रोम में एक चर्च। वह उनकी तुलना करता है, और फिर से, इस बिंदु पर मुख्य रूप से यहूदियों से बना है, भगवान के पुराने नियम के लोगों से, जिन्होंने मिस्र छोड़ दिया, और जंगल के माध्यम से वादा किए गए देश तक यात्रा की, फिर भी उन्होंने विद्रोह किया, और उन्होंने अंदर जाने से इनकार कर दिया ... और फिर लेखक जो कहता है, वह इसकी तुलना आराम के वादे के संदर्भ में करता है।

वह कहता है, परमेश्वर की पुरानी वाचा के लोग, इस्राएली जो जंगल में भटकते थे, अर्थात्, वह एक वादे के रूप में खड़ा था जिसे वे प्राप्त कर सकते थे, फिर भी वे उस आराम को प्राप्त करने में असफल रहे, जो कि जंगल की पीढ़ी है। वे उस विश्राम को प्राप्त करने में असफल रहे। उन्हें उनकी अवज्ञा और विद्रोह के कारण उस विश्राम से वंचित कर दिया गया क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वादों पर कार्य करने, और भूमि में प्रवेश करने, और उस देश में विश्राम का अनुभव करने से इनकार कर दिया था जिसका वादा परमेश्वर ने उनसे किया था।

और अब, वह कहते हैं, इब्रानियों के पाठक, फिर से, पहली सदी में, अब लेखक कहता है, हे पाठकों, तुम भी वही गलती करने के खतरे में हो। यानी, आपके सामने भी विश्राम का वादा है, और आप हैं, आप भी वही गलती करने के खतरे में हैं, लेकिन वही गलती न करें जो आपके पूर्वजों ने की थी, जो ठीक इसी स्थिति में आए थे, उस विश्राम की दूरी तक पहुंचने के बावजूद, वे विश्वास करने में विफल रहे, वे इसे विश्वास में अपनाने में विफल रहे, वे भगवान के वादे का पालन करने में विफल रहे, और, और बाकी को जब्त कर लिया, और इसके बजाय उन्हें दंडित किया गया, और, और भगवान के फैसले के तहत। और अब वह कहता है, हे नये नियम के पाठकों, अब तुम भी विश्राम के वादे का सामना कर रहे हो।

उस विश्राम में प्रवेश करने का वादा अब आपके सामने है, इसलिए इसे उस तरह से न उड़ाएं जैसे आपके पूर्वजों ने जंगल में किया था। तो, क्या आप, क्या आप संबंध, सादृश्य देखते हैं? वह, वह, फिर से, मूल रूप से भगवान के पुराने नियम के लोगों के बीच एक पत्राचार तैयार कर रहा है, और अब उसके पाठक, जो यहूदी भी हैं, लेकिन अब हैं, उन्होंने, फिर से, किसी तरह से, सुसमाचार का जवाब दिया है, भीतर आ गए हैं भगवान के लोगों के रूप में चर्च की कक्षा। लेकिन फिर से, लेखक को संदेह है कि वे वही काम करने के खतरे में हैं जो पुराने नियम के लोगों ने किया था, जो कि ठीक ऊपर आ रहा है, और उस बिंदु पर जहां वे फिर से, लगभग वादे की स्पर्श दूरी के भीतर, करने के लिए तैयार हैं। इसे विश्वास से अपनाओ।

वे परमेश्वर के विश्राम के वादे को पूरा होते देखने की कगार पर खड़े हैं। फिर भी, एक बार फिर, पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों ने आज्ञा मानने से इंकार कर दिया। वे उस विश्राम में प्रवेश करने से इन्कार करते हैं।

वे विश्वास में कार्य करने और प्रतिक्रिया देने से इनकार करते हैं। और अब लेखक नहीं चाहता कि इतिहास खुद को इस तरह से दोहराए, कि उसके पाठक वही गलती करें, और जो बाकी अब उनके लिए उपलब्ध है उसमें प्रवेश न करें। आप देख सकते हैं कि क्या है, ऐसा है, ऐसा है, क्या है, जो हो रहा है वह यह है कि पुराने नियम में इज़राइल को भूमि में प्रवेश करके जो भौतिक आराम का अनुभव करना था, वह एक अर्थ में, एक प्रकार या एक प्रत्याशा था अब यीशु मसीह के माध्यम से अधिक आराम उपलब्ध है।

तो, लेखक इब्रानियों के अपने पाठकों को जो बता रहा है वह यह है कि जिस विश्राम में आप प्रवेश करने जा रहे हैं वह किसी निश्चित भूमि में प्रवेश नहीं कर रहा है, बल्कि अब यह वही है जो भूमि ने पुराने नियम में दर्शाया था और क्या था, इसके लिए क्या इंगित किया था, वह यह है कि यीशु मसीह जो विश्राम और मुक्ति लाते हैं वह अब इब्रानियों के पाठकों के लिए उपलब्ध है। और फिर, वह, वह उन्हें चाहता है, संदेश यह है, नई वाचा के लोगों के रूप में, लेखक अपने पाठकों को आकर्षित करने की कोशिश कर रहा है, वह कहने की कोशिश कर रहा है, इसे उड़ाओ मत। वही गलती न करें जो आपके पुराने नियम के पूर्वजों ने जंगल में की थी, जिन्होंने विश्वास करने और आज्ञापालन करने से इनकार कर दिया था।

और इसलिए, उन्होंने विश्राम में प्रवेश नहीं किया. अब, इब्रानियों के पाठकों के पास भी विश्राम का वादा है, जो कि यीशु मसीह में विश्राम है। लेकिन यदि वे विश्वास के साथ प्रतिक्रिया नहीं देते हैं और यीशु मसीह को नहीं अपनाते हैं तो उन्हें वही गलती करने का खतरा है।

और इसके बजाय, यदि वे पुराने, अपने पुराने पैतृक धर्म में वापस जाते हैं। लेकिन, लेकिन, लेकिन क्या आप लेखक द्वारा लिखे गए बाकी को देखते हैं, और ध्यान देते हैं कि जब आप अध्याय तीन और चार पढ़ते हैं, तो बाकी शब्द का उपयोग कितनी बार किया जाता है? क्योंकि, फिर से, इस्राएल में परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों के लिए, बाकी लोग शारीरिक रूप से भूमि में आराम कर रहे थे, भूमि में बस रहे थे, और, और दुश्मनों से आराम कर रहे थे, और भगवान के आशीर्वाद का आनंद ले रहे थे। लेकिन, इब्रानियों के लेखक कह रहे हैं कि यह केवल एक प्रकार का, या एक प्रत्याशा था, और एक बड़े आराम की ओर इशारा करता था जो अब यीशु मसीह के माध्यम से आता है।

और जो आराम अब हिब्रू ईसाइयों, इब्रानियों के पाठकों के लिए उपलब्ध है, वह आराम जो उनके लिए उपलब्ध है वह मसीह में आराम करना, मुक्ति के लिए मसीह पर भरोसा करना, और मुक्ति का आशीर्वाद जो वह प्रदान करता है। लेकिन यदि वे अपने पूर्वजों की तरह व्यवहार करते हैं और ईश्वर के वादे के प्रति विश्वास और आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया देने से इनकार करते हैं, तो उन्हें इसे खोने और इसे अनदेखा करने का खतरा है। अब, अध्याय तीन और चार, इसमें सभी प्रकार के निहितार्थ हैं जिन पर मैं अभी नहीं जाना चाहता।

लेकिन, उदाहरण के लिए, सब्बाथ का मुद्दा यह है कि क्या ईसाइयों को एक ही दिन सब्बाथ के रूप में मनाना चाहिए? पुराने नियम और पूरे यहूदी धर्म में, उन्होंने सातवें दिन को सृष्टि के आधार पर सब्त के दिन के रूप में मनाया, जिसे उन्होंने अलग रखा था। दिलचस्प बात यह है कि, फिर

कहीं न कहीं, ईसाई और चर्च, रविवार को मिलना शुरू करते हैं, और कुछ लोगों को आश्चर्य होता है कि क्या यह उस तरह का नया ईसाई सप्ताह है। क्या ईसाइयों को आज विश्राम का दिन या सब्त का दिन मनाना चाहिए? मेरी राय में, मुझे इस बारे में बाद में बात करने में फिर से खुशी होगी। मेरी राय में, इसका उत्तर नहीं है।

मैं सोचता हूँ कि नया नियम, और इब्रानियों के अध्याय तीन और चार जैसी पुस्तक स्पष्ट है, आराम का वह दिन जो इस्राएलियों ने मनाया था, वह सप्ताह में से एक दिन, अब अंततः उस आराम में पूरा हो गया है जिसे हम यीशु मसीह में अनुभव करते हैं। इसलिए, अध्याय तीन और चार के अनुसार, हम मसीह पर भरोसा करके, मसीह में आराम करके, और अपने उद्धार के लिए उस पर भरोसा करके सब्त का दिन पूरा करते हैं। तो, एक अर्थ में, जैसा कि किसी ने एक बार मुझसे कहा था, ईसाइयों के लिए हर दिन एक सप्ताह है जब हम मसीह पर भरोसा करते हैं, और जैसा कि इब्रानियों के लेखक कहते हैं, जब हम अपने स्वयं के कार्यों से रुक जाते हैं, और हम मसीह पर भरोसा करते हैं, तो हम पूरा करते हैं, हम इस विश्राम को अपनाते हैं, हम सप्ताह विश्राम के सच्चे इरादे को पूरा करते हैं जो भगवान ने अपने लोगों के लिए प्रदान किया था।

और जो आशा की गई थी वह अब यीशु मसीह द्वारा प्रदान किए गए उद्धार में पूरी हो गई है। मुझे लगता है कि चर्च रविवार को पूजा के लिए इसलिए इकट्ठा होता है क्योंकि यही वह दिन है जब यीशु मृतकों में से जीवित हुए थे, और यही वह दिन है जब हम यीशु के पुनरुत्थान और उसके सभी अर्थों का जश्न मनाते हैं। हालाँकि, जैसा कि आप में से कुछ लोग जानते होंगे, जैसे-जैसे चर्च बढ़ने लगते हैं और बड़े होने लगते हैं, बहुत से बड़े चर्चों में अब शनिवार को भी पूजा सेवाएँ होती हैं, जो पूरी तरह से ठीक है।

लेकिन फिर भी, मुझे ऐसा लगता है कि ईसाइयों को किसी एक दिन को नए सप्ताह के रूप में मनाने के लिए नहीं कहा गया है। हमें सब्त के दिन की पूर्ति के रूप में अपने उद्धार के लिए आराम करने और मसीह पर भरोसा करने के लिए बुलाया गया है। ठीक है, लेकिन मुख्य बात यह है कि हर कोई देखता है कि सहसंबंध या कनेक्शन, लेखक क्या कर रहा है, वह तुलना करने की कोशिश कर रहा है, वह पुराने नियम का उपयोग कर रहा है, बस वह, पुराने नियम के इज़राइल जीवन का वह खंड।

जब उन्होंने मिस्र छोड़ा और लाल सागर पार किया, जंगल में घूमते हुए कनान देश तक पहुंचे, फिर भी उन्होंने अंदर जाने से इनकार कर दिया। लेखक अब इसे अपने, अपने पाठकों या किसी प्रकार के लिए एक मॉडल या उदाहरण के रूप में उपयोग करता है।, अपने पाठकों की और उन्हें पाने की कोशिश करते हुए, वही गलती न करें। मसीह की पूर्ति के युग में, आपके पास भी विश्राम का वादा है, लेकिन इसे अपने पूर्वजों की तरह उड़ाएं नहीं और विश्वास करने और उस विश्राम में प्रवेश करने से इनकार न करें।

और जैसा कि मैंने कहा, बाद में, इब्रानियों में, लेखक यीशु की तुलना बलि प्रणाली से करेगा। और दिलचस्प बात यह है कि इसके लिए उनका मुख्य मॉडल मुख्य रूप से मंदिर नहीं है, बल्कि यह तम्बू है। जैसा कि मैंने पिछली कक्षा की अवधि में संकेत दिया था, कुछ, कुछ सुझाव देंगे, ठीक है,

इब्रानियों, इसका मतलब है कि इब्रानियों की पुस्तक 70 ईस्वी में मंदिर के विनाश के बाद लिखी गई होगी।

प्रारंभिक ईसाई धर्म में 70 ई. एक महत्वपूर्ण तिथि है। तभी यरूशलेम में मंदिर को नष्ट कर दिया गया और उस पर दोबारा कब्जा कर लिया गया। लेकिन सबसे अधिक संभावना यह है कि इस समय मंदिर बहुत अच्छे से खड़ा रहा होगा।

इसका कारण यह है कि लेखक टैबरनेकल को अपने मॉडल के रूप में उपयोग करता है, जब वह मसीह की तुलना बलिदान प्रणाली और पुरोहिती से करना चाहता है, तो वह टैबरनेकल के विवरण पर भरोसा करता है, न कि मंदिर पर। वह ऐसा इसलिए करता है, मुझे नहीं लगता कि यह जरूरी है क्योंकि मंदिर नष्ट हो गया था, बल्कि इसलिए कि वह ऐसा करता है, वह अपने प्राथमिक मॉडल के रूप में जंगल की पीढ़ी पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। और इसलिए, जंगल की पीढ़ी मंदिर में पूजा नहीं करती थी।

वे अनेक अवसरों पर वह तम्बू लेकर चले, जो उन्होंने आपके लिए स्थापित किया था। इसलिए, मुझे लगता है कि इसीलिए लेखक टैबरनेकल से अपील करता है क्योंकि वह है, वह नहीं है, वह पूरे पुराने नियम और यहूदी धर्म के संपूर्ण जीवन का उल्लेख नहीं कर रहा है। वह पुराने नियम के इज़राइल जीवन के उस एक, उस एक खंड पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

वह जंगल की पीढ़ी है जिसने मिस्र छोड़ दिया और वादा किए गए देश की ओर अपना सफर तय किया। उस समय के दौरान, उन्होंने तम्बू के माध्यम से स्थापित किया और नीचे आकर परमेश्वर की आराधना की। और इसीलिए लेखक तम्बू से अपील करता है क्योंकि वह जंगल की पीढ़ी पर एक प्रकार की चेतावनी के मॉडल के रूप में ध्यान केंद्रित कर रहा है जो वह अपने पाठकों को दे रहा है कि वे वही काम न करें जो उन्होंने किया था और इस वादा किए गए आराम को खो दें।

अब, अध्याय तीन और चार भी एक और मुद्दा उठाते हैं, और वह यह है कि अध्याय तीन और चार में वास्तव में लगभग आधा दर्जन चेतावनी अंशों में से दूसरा शामिल है। यदि आपको याद हो, आपने हाल ही में जो प्रश्नोत्तरी ली थी, मुझे लगता है कि सोमवार को, वह प्रश्नोत्तरी इब्रानियों पर थी, उनमें से एक प्रश्न यह था कि इब्रानियों की विशिष्ट विशेषताओं में से एक क्या था, और वह है कड़ी चेतावनियाँ। इब्रानियों के समूचे परिदृश्य में पाठकों के लिए ये कठोर या बल्कि स्पष्ट चेतावनियाँ बिखरी हुई हैं।

और फिर, यह समझ में आता है कि यदि पाठक यीशु मसीह से मुंह मोड़ने वाले हैं और दूसरी दिशा में जाने वाले हैं और पुरानी वाचा, अपने पैतृक धर्म की ओर वापस जाने वाले हैं, तो ये चेतावनी अंश, एक तरह से, पाठकों को झटका देने के लिए हैं।, उन्हें जगाने के लिए और उन्हें यह दिखाने के लिए कि वे क्या कर रहे हैं या वे क्या करने वाले हैं, इसका खतरा है। और इसलिए, आपके पास ऐसे कई सख्त या कड़ी चेतावनी वाले मार्ग हैं जो, फिर से, पाठकों को चेतावनी देने के लिए हैं कि यदि वे यीशु मसीह और सुसमाचार को अपनाने से इनकार करते हैं, और यदि कुछ भी करने से इनकार करते हैं तो वे क्या करने वाले हैं। कारण वे वापस जाना चाहते हैं और इसके बजाय अपने पैतृक धर्म में लौटना चाहते हैं। उन चेतावनी अंशों में से सबसे प्रसिद्ध में से एक, मुझे

लगता है कि हम इसे पहले ही पढ़ चुके हैं, लेकिन मैं इसे फिर से पढ़ूंगा, अध्याय 6 में पाया जाता है। और श्लोक 4 से शुरू करते हुए, लेखक कहता है, मैं श्लोक 8 को पढ़ूंगा। तो यह इब्रानियों 6, 4 से 8 तक है। यह उन चेतावनी अंशों में से एक है या उनमें से एक है, यदि रखें, इब्रानियों में व्याख्या और उपदेश के बीच फ्लिप-फ्लॉप होता है।

उपदेशों में आम तौर पर कठोर चेतावनियों में से एक शामिल होता है। और इसे सुनो. क्योंकि जो लोग एक बार प्रबुद्ध हो चुके हैं, उन्होंने स्वर्गीय उपहार का स्वाद चखा है, उन्होंने पवित्र आत्मा को साझा किया है, उन्होंने ईश्वर के वचन की अच्छाई और आने वाले युग की शक्तियों का स्वाद चखा है, उन्हें फिर से पश्चात्ताप की ओर बहाल करना असंभव है। और फिर वे गिर गए, क्योंकि वे स्वयं ही परमेश्वर के पुत्र को फिर से क्रूस पर चढ़ा रहे हैं, और वे उसे सार्वजनिक रूप से लज्जित या तिरस्कृत कर रहे हैं।

वह ज़मीन जो बार-बार होने वाली बारिश को पी जाती है और फिर उन लोगों के लिए उपयोगी फ़सलें पैदा करती है जिनके लिए वह खेती की जाती है, उसे ईश्वर का आशीर्वाद मिलता है। परन्तु यदि वह भूमि काँटे और ऊँटकटारे उत्पन्न करे, तो वह व्यर्थ है, और शापित होने के कगार पर है, और अन्त में जला दिया जाएगा। तो यह उन पाठकों के लिए उनका संदेश है जो सुसमाचार से हटकर यहूदी धर्म में वापस जाने पर विचार कर रहे हैं।

अब, इस पाठ में क्या चल रहा है? इसके कई तरीके हैं, और फिर, यह कई चेतावनी अंशों में से केवल एक है, लेकिन यह काफी प्रसिद्ध है। ये कौन लोग हैं जिनके बारे में पाठक कहते हैं कि वे प्रबुद्ध हो गए हैं, उन्होंने स्वर्गीय उपहार का स्वाद चखा है, उन्होंने परमेश्वर के वचन की अच्छाई को साझा किया है, उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हुई है, और अब वे दूर हो गए हैं, और अंत में, वे बेनकाब हो जाते हैं, ऐसा करने पर, वे यीशु मसीह को सार्वजनिक अवमानना के लिए उजागर करते हैं, और अंत में, उन्हें जलाए जाने का खतरा होता है। मेरा मतलब है, यह कौन है जिसका वर्णन लेखक कर रहा है? ईसाई धर्म के पूरे इतिहास में, इन चेतावनी अंशों, या बल्कि सख्त चेतावनियों का वर्णन करने के कई तरीके रहे हैं।

फिर, यहाँ एक और है। यह वास्तव में उससे भी थोड़ा अधिक गंभीर है जो मैंने अभी पढ़ा है, जैसा कि वे कहते हैं, श्लोक 26। फिर से, वह उन्हीं पाठकों को संबोधित कर रहे हैं, लेकिन अब यहां बताया गया है कि वह उन्हें कैसे संबोधित करते हैं।

यहां बताया गया है कि वह उन्हें कैसे चेतावनी देता है। क्योंकि यदि हम सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के बाद जानबूझकर पाप में लगे रहते हैं, तो पापों के लिए कोई बलिदान नहीं रह जाता, बल्कि न्याय की एक भयानक संभावना और आग का प्रकोप रह जाता है जो शत्रुओं को भस्म कर देगा। जिसने भी मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन किया है, वह दो या तीन गवाहों की गवाही पर बिना दया के मर जाता है।

आप क्या सोचते हैं कि उन लोगों के लिए कितनी बुरी सज़ा होनी चाहिए जो परमेश्वर के पुत्र को अस्वीकार करते हैं, जो उस वाचा के खून को अपवित्र करते हैं जिसके द्वारा वे पवित्र किए गए थे, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान करते हैं? क्योंकि हम उसे जानते हैं जो कहता है, पलटा मेरा



है, मैं बदला लूंगा। और फिर, यहोवा अपने लोगों का न्याय करेगा। जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना एक डरावनी बात है।

इस प्रकार लेखक अपने पाठकों को संबोधित करता है। तो, ये कौन लोग हैं जिन्हें प्रबुद्ध किया गया है, उन्हें सत्य का ज्ञान प्राप्त हुआ है, लेकिन अब वे परमेश्वर के पुत्र से दूर हो जाने या उसे अस्वीकार करने के खतरे में हैं। वह किसका वर्णन कर रहा है? फिर, ऐतिहासिक रूप से इन चेतावनियों का वर्णन करने के कई तरीके रहे हैं। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि मुझे पता है कि इस स्लाइड का क्रम आपके नोट्स के क्रम के अनुरूप नहीं है, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि मैंने ऐसा क्यों किया, लेकिन फिर भी, आपको अपने नोट्स को छोड़ना होगा।

पहला दृष्टिकोण यह है कि कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि ये चेतावनियाँ केवल काल्पनिक हैं। यानी, वे वास्तव में नहीं हो सके, लेकिन यह पाठकों को जगाने का लेखक का एक तरह का अलंकारिक तरीका है। यह ऐसा है मानो वह कह रहा हो कि यह वास्तव में नहीं हो सकता है, लेकिन यदि यह हो सकता है, यदि आप वास्तव में गिर सकते हैं, और यदि आप ईश्वर के पुत्र को अस्वीकार कर सकते हैं, तो यही होगा।

लेकिन यह वास्तव में नहीं हो सकता है, इसलिए आपके पास यीशु मसीह की आज्ञाकारिता में आगे बढ़ने और प्रतिक्रिया देने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। तो, कुछ लोग कहेंगे, हमें इन चेतावनियों के बारे में बहुत अधिक चिंता करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि ये केवल काल्पनिक परिदृश्य हैं जो वास्तव में घटित नहीं होंगे। एक अन्य संभावित दृष्टिकोण यह है कि यह वास्तविक ईसाइयों का वर्णन कर रहा है जो वास्तव में अपना उद्धार खो देते हैं।

अर्थात्, एक बिंदु पर, उन्होंने यीशु मसीह के प्रति विश्वास के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की है, और वे वही हैं जिन्हें हम आज कहेंगे कि वे सच्चे ईसाई हैं, फिर भी यीशु मसीह से दूर होकर और अब उस पर विश्वास करने से इनकार करके, वे वास्तव में उसे खो देते हैं या खो देते हैं। मोक्ष। यह वास्तविकता बनना बंद हो जाता है। वे अब परमेश्वर के लोग नहीं रहेंगे।

वह मुक्ति जिसे उन्होंने एक बार अनुभव किया था और प्राप्त किया था, अब उन्होंने खो दिया है और छोड़ दिया है क्योंकि उन्होंने अब पाप किया है और यीशु मसीह से मुंह मोड़ लिया है। इसे अक्सर आर्मिनियाई दृश्य के रूप में जाना जाता है। आर्मिनियन दृष्टिकोण का नाम ऐतिहासिक रूप से, जैकब आर्मिनियस नाम के एक व्यक्ति के साथ जुड़े होने के कारण रखा गया है, जो आज्ञाकारिता और मानवीय जिम्मेदारी की आवश्यकता पर जोर देने के लिए जाना जाता था, और यदि ऐसा नहीं होता है, तो कोई व्यक्ति अपना उद्धार खो सकता है।

इसलिए, इसे कभी-कभी आर्मिनियाई दृष्टिकोण भी कहा जाता है। लेकिन फिर, वे कहेंगे, ये दो अंश जो मैंने अभी पढ़े हैं, उन लोगों का वर्णन करते हैं जो एक समय में सच्चे ईसाई थे, भगवान के लोग थे, फिर भी अब वे ऐसे नहीं रहे हैं। वह मुक्ति अब मिल गई है, उन्होंने आज्ञा मानने से इनकार करने के कारण उसे खो दिया है और खो दिया है।

विपरीत दृष्टिकोण को केल्विनवाद के रूप में जाना जाता है, जो अक्सर जॉन केल्विन की कुछ सोच से जुड़ा या वापस जाता है, जिन्होंने भगवान की संप्रभुता, भगवान की कृपा और भगवान की हमें बनाए रखने की क्षमता और भगवान की क्षमता, यानी मोक्ष पर जोर दिया। आरंभ से अंत तक मुख्य रूप से परमेश्वर का कार्य है, तो उसे कैसे निराश किया जा सकता है? इसे कैसे विफल किया जा सकता है? और इसलिए, वे कहेंगे, जिन लोगों को लेखक संबोधित कर रहा है, भले ही वे बचाए हुए प्रतीत हो रहे हों, लेकिन वास्तव में वे बचाए हुए नहीं थे। तथ्य यह है कि वे यीशु मसीह से मुंह मोड़ लेंगे, यह दर्शाता है कि वे वास्तव में पहले स्थान पर बचाए नहीं गए थे। इसलिए भले ही वे ईश्वर के लोग प्रतीत हुए हों और यीशु मसीह के साथ रिश्ते में मुक्ति का अनुभव किया हो, यह तथ्य कि वे ईश्वर के पुत्र को अस्वीकार करने या उससे दूर हो जाने को तैयार हैं, जैसा कि ये चेतावनियाँ कहती हैं, यह साबित करता है कि वे थे।' यह वास्तव में वास्तव में बचाए गए या पहले स्थान पर भगवान के लोग हैं।

यह दूसरा विकल्प है. फिर, आमतौर पर, ये दोनों चर्च के इतिहास में दो प्रमुख विचार हैं और वे अक्सर एक-दूसरे के विरोधी रहे हैं। चौथी संभावना यह है कि लेखक, कुछ लोगों ने सुझाव दिया है, कि हालांकि लेखक वास्तव में मुक्ति के बारे में बात नहीं कर रहा है, वह पुरस्कार के बारे में बात कर रहा है।

तो, ये लोग, ये लोग जो रूपक का उपयोग करने के लिए गिर जाते हैं या जलने के खतरे में हैं, या जो मसीह को अस्वीकार करते हैं और क्रोधित भगवान के हाथों में पड़ने के खतरे में हैं, ये लोग हैं, यह है अपने उद्धार को न खोने का वर्णन करना। यह बस पुरस्कार खोने का वर्णन कर रहा है। तो, ये ईसाई हैं, बात बस इतनी है कि उनके पास उतने पुरस्कार या उतने आशीर्वाद नहीं होंगे जितने उन लोगों के पास होंगे जो आज्ञापालन करते हैं।

और इसकी कल्पना करने के विभिन्न तरीके हैं। कुछ लोग कहेंगे कि उन्हें वर्तमान में उतने अधिक आशीर्वाद नहीं मिलेंगे, कुछ कहेंगे कि भविष्य में नहीं, सामान्य शब्दावली का उपयोग करने के लिए, वे अभी भी स्वर्ग में होंगे, लेकिन उनके पास उतने पुरस्कार नहीं होंगे जितने उन लोगों के पास होंगे जिनके पास यीशु मसीह में विश्वास का जवाब दिया है. तो ये चार प्राथमिक विकल्प हैं।

मैंने ऐसे कुछ अन्य लोगों को देखा है जो इनके जितने सामान्य नहीं हैं। फिर, आखिरी वाला, मुझे लगता है कि मेरे विचार में पहला और आखिरी वाला शायद सबसे अधिक समस्याग्रस्त है। यानी, पहला मुश्किल है क्योंकि मुझे यह सोचना बहुत मुश्किल लगता है कि एक लेखक इस तरह के मुद्दे को संबोधित करने के लिए उपदेश का एक शब्द भी लिख रहा है, वह बस कुछ काल्पनिक परिदृश्य दे रहा होगा जो वास्तव में नहीं हो सकता है।

हालाँकि हम इन चेतावनियों को लेते हैं, मुझे ऐसा लगता है कि लेखक उन्हें किसी ऐसी चीज़ के बारे में चेतावनी दे रहा है जो वास्तव में घटित हो सकती है, न कि कोई काल्पनिक चीज़। मेरे लिए निचली बात यह है कि उस दृष्टिकोण के साथ अन्य प्रकार की समस्याएं भी हैं, लेकिन मुझे लगता है कि भाषा थोड़ी बहुत तीखी और गंभीर है, जिसे केवल इनाम खोने तक ही सीमित रखा जा सकता है। जब वह गिरने और अंत में, जलाए जाने, और परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाने,

परमेश्वर के पुत्र को अस्वीकार करने, न्यायी परमेश्वर के हाथों में पड़ने और न्याय के अधीन पड़ने की बात करता है, तो वह उसकी भाषा नहीं लगती, ओह, आप बस इनाम खो रहे हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह शाश्वत दण्ड और न्याय है। इसलिए, मुझे लगता है कि मैं आश्चर्य नहीं हूँ कि आखिरी वाला भी वास्तव में अच्छी तरह से फिट बैठता है। तो, एक अर्थ में, हम कह सकते हैं, अच्छा, हमें इन दोनों में से किसे समझना चाहिए? इससे पहले कि मैं उस पर गौर करूँ, मैं बस कुछ प्रश्न उठाता हूँ और फिर मैं अध्याय छह पर वापस जाना चाहता हूँ, पहला अध्याय जो मैंने पढ़ा है, और आपको बस एक उदाहरण देता हूँ कि मैंने इसे कैसे पढ़ा और मैं इसे कैसे समझता हूँ।

सबसे पहले, एक प्रश्न यह है कि पाठकों को कौन सा पाप करने का खतरा है? दूसरे शब्दों में, हम इन चेतावनी अंशों के बारे में क्या निश्चित हो सकते हैं? सबसे पहले, वे कौन सा पाप करने के खतरे में हैं? मेरी राय में, क्योंकि पूरे चर्च के इतिहास में कई सुझाव आए हैं, कुछ लोगों ने सोचा है कि क्या गर्भपात कराने का पाप योग्य है या आत्महत्या करना योग्य है? क्या साम्य लेने या संस्कारों में भाग लेने में असफल होना, बपतिस्मा लेने में असफल होना, क्या पाप करने के योग्य है? क्या वह पाप है जिसके बारे में लेखक बात कर रहा है? जब आप इसे इस संदर्भ में रखते हैं तो मुझे ऐसा लगता है कि लेखक जिस पाप के बारे में बात कर रहा है वह केवल यीशु मसीह में आज्ञाकारिता और विश्वास में प्रतिक्रिया देने से इनकार करना है। यह यीशु मसीह से जानबूझकर और सचेत रूप से दूर जाना है। याद रखें कि पिछली बार मैंने जो पढ़ा था उसमें लेखक ने क्या कहा था यदि हम जानबूझकर पाप करते रहते हैं, तो यह कुछ ऐसा है जिसे पाठक सचेत रूप से करेंगे।

अर्थात्, वे जानबूझकर और जानबूझकर यीशु मसीह से मुंह मोड़ लेंगे और विश्वास और आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया देने से इनकार कर देंगे। तो यह पहली बात है. यह कोई अचेतन या आकस्मिक चीज़ नहीं है, और इसे किसी एक विशिष्ट पाप से नहीं पहचाना जाना चाहिए।

लेखक मुख्य रूप से उन लोगों को संबोधित कर रहा है, जैसा कि उन्होंने कहा, प्रबुद्ध हो चुके हैं और जो यीशु मसीह के ज्ञान में आ गए हैं, फिर भी अब वे जानबूझकर उससे दूर जा रहे हैं और उससे मुंह मोड़ रहे हैं और उसे पूरी तरह से खारिज कर रहे हैं। यीशु के मन में यही त्रुटि है। इसलिए, जब कोई मुझसे पूछता है, तो मुझे आश्चर्य होता है, क्या मैंने यह अपराध किया है? मैं बस उनसे पूछता हूँ, क्या आपने ऐसा किया? क्या आप जानबूझकर यीशु मसीह को अस्वीकार कर रहे हैं और उससे मुंह मोड़ रहे हैं और उससे कोई लेना-देना नहीं चाहते हैं? यही एकमात्र परिदृश्य है जिसे इब्रानियों का लेखक संबोधित कर रहा है।

दूसरा प्रश्न जो मैंने आपके पाठ्यक्रम में सूचीबद्ध किया है वह यह है कि पाठक कौन हैं? फिर से, मैं सोचता हूँ, और यहीं से मैं इन चेतावनी अंशों को समझने की शुरुआत करता हूँ। फिर से, मुझे लगता है कि इन पाठकों ने, कम से कम उनमें से अधिकांश, लेखक को संदेह है, अभी तक यीशु मसीह को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया है। अर्थात्, पुरानी वाचा से नई वाचा में इस परिवर्तन में, उन्हें संदेह है कि उनमें से कुछ हैं, जैसा कि मैंने कहा, वे एक तरह से लड़खड़ा रहे हैं।

उन्होंने अभी तक यीशु मसीह को पूरी तरह से विश्वास में नहीं लिया है। और अब वे अभी भी उस बिंदु पर हैं जहां वे वापस लौटने और अपने पैतृक धर्म में लौटने और सुसमाचार में और यहां तक कि चर्च का हिस्सा बनने के बारे में जो कुछ भी उन्होंने जाना और अनुभव किया है, उसे अस्वीकार करने के इच्छुक हैं। वे चर्च और सुसमाचार के दायरे में आ गए हैं, और उन्होंने बहुत कुछ अनुभव किया है, फिर भी अब वे अपनी पीठ मोड़ने और अपने पैतृक धर्म में वापस जाने के इच्छुक हैं।

इसलिए, मैं कहूंगा कि इन लोगों ने अभी तक यीशु मसीह के प्रति विश्वास में पूरी तरह से प्रतिक्रिया नहीं दी है और अभी तक सुसमाचार को पूरी तरह से नहीं अपनाया है। और लेखक, एक तरह से, उन्हें विश्वास में मुक्ति की इस नई वाचा में यीशु मसीह को गले लगाने के लिए उस आखिरी कदम पर धकेलने के लिए प्रेरित करना चाहता है। लेकिन इसके बजाय, वे अपने पुराने नियम के पूर्वजों की तरह कार्य करने के खतरे में हैं, जो वादा किए गए देश में प्रवेश करने के कगार पर थे, फिर भी उन्होंने विद्रोह और कठोर हृदय के कारण अविश्वास के कारण इनकार कर दिया, उन्होंने उस विश्राम में प्रवेश करने से इनकार कर दिया।

वास्तव में, मुझे लगता है कि इब्रानियों का लेखक भी यही कहता है। अध्याय 4 और पद 2 में, यह मेरे लिए यह समझने के लिए महत्वपूर्ण छंदों में से एक है कि पाठक कौन हैं और उनकी आध्यात्मिक स्थिति क्या है, और वे पुराने नियम से कैसे संबंधित हैं। लेखक, यह अध्याय 3 और 4 में है, उस पाठ का हिस्सा जिसे हम अभी देख रहे थे, जहां लेखक स्पष्ट रूप से अपने पाठकों की तुलना पुराने नियम के लोगों से करता है जो जंगल में भटकते थे।

वह कहते हैं, इसलिए, जबकि परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करने का वादा अभी भी खुला है, और वह अपने पाठकों को बता रहा है कि विश्राम का वादा किया गया है, जो अब उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा कर रहा है और आराम कर रहा है, वादा किया गया विश्राम अभी भी खुला है, आइए हम इस बात का ध्यान रखें कि इनमें से कोई भी यह देखा जाना चाहिए कि आप उस तक पहुँचने में असफल रहे हैं। वास्तव में, सुसमाचार का शुभ समाचार हमारे पास वैसे ही आया जैसे उनके पास। विषय पुराने नियम के लोग हैं जो जंगल से होकर वादा किए गए देश तक आए लेकिन उन्होंने अंदर जाने से इनकार कर दिया।

वह कहते हैं, वास्तव में, खुशखबरी हमारे पास वैसे ही आई जैसे उनके साथ आई थी। अर्थात्, उनके पास इस विश्राम में प्रवेश करने का शुभ समाचार, सुसमाचार था, वह वादा जो परमेश्वर ने प्रदान किया था। फिर भी जो सन्देश उन्होंने सुना उससे उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि उन्होंने उस सन्देश को विश्वास के साथ नहीं जोड़ा।

क्योंकि हम जो विश्वास करते हैं, उस विश्राम में प्रवेश करते हैं, जैसा परमेश्वर ने कहा है। तो, उस वाक्यांश पर ध्यान दें, पुराने नियम के लोग स्पष्ट रूप से परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते थे। अर्थात्, उन्होंने जो सन्देश सुना, यह शुभ सन्देश, यह सुसमाचार, बाकियों का, और परमेश्वर ने जो वादा किया था, उसे एक साथ नहीं जोड़ा।

उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया और इसे आस्था के साथ नहीं जोड़ा। और अब मुझे लगता है कि लेखक को संदेह है कि उसके पाठक एक ही नाव में हैं। उन्होंने भी सुसमाचार का प्रचार किया है, फिर भी उन्होंने अभी तक विश्वास के माध्यम से उस रिश्ते को मजबूत नहीं किया है।

उन्होंने अभी तक पूरी तरह से प्रतिक्रिया नहीं दी है और विश्वास के साथ उस सुसमाचार की खुशखबरी को स्वीकार नहीं किया है। और पाठक उनसे यही करवाने की कोशिश कर रहा है। और फिर, वह यह दिखा कर बार-बार ऐसा करता है कि हर तरह से, यीशु मसीह पुराने नियम के सभी व्यक्तियों, संस्थानों, घटनाओं, बलिदानों, तम्बू आदि से श्रेष्ठ है।

यीशु मसीह उन सभी की पूर्ति है। तो वे उस पर वापस क्यों जाना चाहेंगे? जब वह वास्तविकता जिसकी ओर उसने संकेत किया था, यीशु मसीह और मुक्ति तथा वह विश्राम जो वह लाता है, अब उपलब्ध है। वे ऐसा क्यों करना चाहेंगे, वे इसे कैसे चूक सकते हैं? वे उससे मुंह क्यों मोड़ना चाहेंगे? इसलिए, मैं यह मानता हूँ कि ये पाठक, फिर से, यहूदी हैं जिन्होंने, फिर से, किसी न किसी तरह से सुसमाचार पर प्रतिक्रिया दी है, चर्च की कक्षा में आए हैं, और इन सभी चीजों का अनुभव किया है, फिर भी, एक ही समय में, लेखक अभी भी संदेह है कि उन्होंने अभी तक इसे विश्वास में पूरी तरह से नहीं अपनाया है।

और उन्हें वापस जाने का खतरा है। तो, ऐसा क्या है जिससे उन्हें खोने का खतरा है? फिर, मुझे लगता है कि उन्हें सुसमाचार से चूक जाने का खतरा है। यह सिर्फ इनाम नहीं खो रहा है, बल्कि उन्हें इस सुसमाचार, मुक्ति, नई वाचा की मुक्ति से पूरी तरह से वंचित होने का खतरा है जो यीशु अब प्रदान करता है और अपने पाठकों को प्रदान करता है।

अब, आपको चेतावनियों में से एक का उदाहरण देने के लिए, आइए इब्रानियों अध्याय 4 और विशेष रूप से अध्याय 4 से 6 पर वापस जाएँ। इब्रानियों 4, 4 से 6, जो तीसरी चेतावनी है, मुख्य चेतावनी। अध्याय 2 में एक है, और फिर अध्याय 3 और 4 में एक है। फिर तीसरा यहाँ अध्याय 6 में आता है। फिर वास्तव में इब्रानियों में दो और चेतावनी अंश हैं। लेकिन यह सबसे आम और प्रसिद्ध है।

क्योंकि जो लोग एक बार प्रबुद्ध हो चुके हैं, उन्होंने स्वर्गीय उपहार का स्वाद चखा है, उन्होंने पवित्र आत्मा में हिस्सा लिया है, उन्होंने ईश्वर के वचन की अच्छाई और युग की शक्तियों का स्वाद चखा है, उन्हें फिर से पश्चाताप की ओर बहाल करना असंभव है। आने के लिए, और फिर वे दूर हो गए हैं। चूँकि वे अपने आप ही परमेश्वर के पुत्र को फिर से क्रूस पर चढ़ा रहे हैं और उसका तिरस्कार कर रहे हैं। जो ज़मीन अपने ऊपर होने वाली बारिश को पी जाती है और ऐसी फसल पैदा करती है जो उन लोगों के लिए उपयोगी होती है जो इसकी खेती करते हैं, उन्हें आशीर्वाद मिलता है।

परन्तु वह भूमि जो वर्षा तो सहती है परन्तु काँटे और ऊँटकटारे पैदा करती है, बेकार है, उसके शापित होने का खतरा है, और अन्त में वह नष्ट और जला दी जाएगी। अब, इस पाठ में क्या चल रहा है? मैं इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ कि हम उन विवरणों को कैसे समझते हैं। वे प्रबुद्ध हो गए हैं, उन्होंने स्वर्गीय उपहार का स्वाद चख लिया है, उन्होंने आने वाले युग की

शक्तियों का अनुभव कर लिया है, उन्होंने पवित्र आत्मा और अच्छे शब्द का स्वाद ले लिया है, फिर भी वे गिर जाते हैं। ये वे वाक्यांश हैं जिन पर मैं ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ।

तो, फिर से, जिस क्रम में वे घटित होते हैं, वे प्रबुद्ध हो गए हैं, उन्होंने स्वर्गीय उपहार का स्वाद चख लिया है, उन्होंने पवित्र आत्मा में हिस्सा ले लिया है, उन्होंने भगवान के वचन की अच्छाई का स्वाद चख लिया है, आने वाले युग की शक्तियों का स्वाद चख लिया है, और फिर वे दूर गिर जाते हैं। आपको क्या लगता है लेखक अपने पाठकों का इस तरह वर्णन क्यों करता है? फिर से, मुझे लगता है कि वह अपने पाठकों की बात कर रहे हैं, पहली शताब्दी के लोग, शायद रोम में, यहूदी और यहूदी ईसाई जिन्होंने प्रतिक्रिया दी होगी या जिनके लिए वह लिख रहे थे। वह उनका इस प्रकार वर्णन क्यों करता है? या इसे कहने का दूसरा तरीका यह है कि ये वाक्यांश आपके दिमाग में क्या याद दिलाते हैं? शायद बस एक जोड़ा.

मुझे लगता है कि सबसे आसान दूसरा है। यह कैसा प्रतीत होता है? स्वर्गीय उपहार का स्वाद और किसने चखा? हम इसे बाइबिल में कहीं सीमित कर देंगे। इस्राएलियों ने ऐसा कब किया? निर्गमन में, और स्वर्गीय उपहार क्या था? स्वर्ग से मन्ना.

बार-बार, स्वर्ग से मन्ना को स्वर्ग से एक उपहार के रूप में वर्णित किया जाता है, एक उपहार जो स्वर्ग से आता है, कुछ ऐसा जो भगवान उन्हें देता है। यह उनके भरण-पोषण और आशीर्वाद का प्रतीक था। चलिए पहले वाले पर वापस चलते हैं।

प्रबुद्ध होने के बारे में क्या? अब जब आप थोड़ा और अधिक ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, तो इस वाक्यांश के प्रबुद्ध होने के बारे में क्या ख्याल है? उसी परिदृश्य के बारे में सोचें। और वैसे, इससे पहले कि हम इसका उत्तर दें, इस्राएलियों की किस पीढ़ी ने स्वर्ग से मन्ना गिरने का अनुभव किया? वे जो निर्गमन से जंगल में भटकते रहे। इसलिए लेखक अभी भी जंगल की पीढ़ी का उपयोग कर रहा है, भले ही वह ऐसा विशेष रूप से नहीं कहता है।

वे वही हैं जिन्होंने स्वर्गीय उपहार, मन्ना का स्वाद चखा है। प्रबुद्ध होने के बारे में क्या? उसी पीढ़ी, उसी कहानी के बारे में सोचें। यह संभवतः क्या दर्शाता है? इस्राएलियों को कैसे पता चला कि जब उन्हें इस तम्बू को पैक करना था और बाहर जाना था? परमेश्वर ने उन्हें व्यवस्था दी, जिससे परमेश्वर के वचन की भलाई का स्वाद चखा।

हमने उसका ख्याल रखा है। इसलिए, परमेश्वर के वचन की भलाई का स्वाद लेना इस्राएल को कानून प्राप्त करने के समान होगा। और क्या? इस बारे में क्या? हाँ, आग का खम्भा जिसने इस्राएलियों को रोशनी प्रदान की।

अच्छा। पवित्र आत्मा में साझेदारी के बारे में क्या? मेरा मतलब है, निश्चित रूप से, उन्होंने ऐसा नहीं किया। पवित्र आत्मा एक ऐसी चीज़ है जो आज हमारे पास चर्च के रूप में है, लेकिन निश्चित रूप से, इस्राएलियों के पास पवित्र आत्मा नहीं था, क्या उनके पास था? या उन्होंने किया? जब आप वापस जाते हैं और इस्राएलियों की जंगल की यात्रा की कहानी पढ़ते हैं, तो इसमें उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त करने का संदर्भ मिलता है।

यशायाह अध्याय 63 का एक संदर्भ है जो इस्राएलियों को पवित्र आत्मा प्राप्त करने का उल्लेख करता है। तो, इस्राएलियों ने भी, जंगल की पीढ़ी में, पवित्र आत्मा के कार्य को देखा होगा। आने वाले युग की शक्तियों के बारे में क्या? यह आने वाले युग का नहीं, बल्कि शक्तियों का संदर्भ है।

यह इज़राइल के अनुभव में क्या याद दिला सकता है? क्या शक्तियाँ या चमत्कार, या इसका अनुवाद करने का कोई अन्य तरीका चमत्कार होगा। आप क्या अनुमान लगायेंगे? जंगल में उन्होंने किस चमत्कार या शक्ति का अनुभव किया होगा? ठीक है। जैसे साँप के काटने पर अलौकिक उपचार होता था।

लाल सागर के पलायन विभाजन के बारे में क्या? मनुष्य का प्रावधान. ऐसी बहुत सी बातें हैं, दिलचस्प बात यह है कि कुछ भजन जो इस बात का उल्लेख करते हैं कि ईश्वर ने इसराइल के लिए क्या किया, उन्हें शक्तियों या चमत्कारों के रूप में संदर्भित किया गया है। अनेक घटनाएँ.

आप ठीक कह रहे हैं। यह संभवतः किसी एक चीज़ को संदर्भित नहीं करता है, बल्कि उन सभी तरीकों को संदर्भित करता है जिनसे भगवान ने चमत्कारिक ढंग से अपने लोगों की ओर से कार्य किया और उन्हें प्रदान किया। और फिर दूर हो जाना संभवतः किससे मेल खाता है? फिर से, जंगल की पीढ़ी और उस कहानी के बारे में सोचते हुए जिसे मैंने कई बार संक्षेप में प्रस्तुत किया है, जंगल की पीढ़ी के इतिहास में दूर जाने का क्या संबंध होगा? याद रखें, भगवान उन्हें जंगल में ले जाते हैं जहाँ वे इन सभी चीज़ों का अनुभव करते हैं।

वे अपना रास्ता रोशन करने के लिए आग के खम्भे के सहारे चलते हैं। ईश्वर स्वर्गीय उपहार के रूप में मन्ना प्रदान करता है। वह उन्हें पवित्र आत्मा भी देता है।

वे परमेश्वर के वचन, उसके अच्छे वचन, जो कि कानून है, का स्वाद चखते हैं। वे परमेश्वर की शक्तियों और चमत्कारों का अनुभव करते हैं। और दूर गिरना किससे मेल खाता है? सही।

बिल्कुल सही। वे भूमि में जाने में असफल हो जाते हैं। तो यहां पर क्या हो रहा है? मुझे लगता है कि लेखक ने जानबूझकर इन शब्दों को यह दर्शाने के लिए चुना है कि उसी तरह जैसे इज़राइल ने भगवान के लोगों का हिस्सा होने के कारण इन सभी चीज़ों का अनुभव किया, फिर भी वे विश्वास करने और भूमि में जाने में विफल रहे।

उसी तरह, इब्रानियों के लेखक ने चर्च का हिस्सा होने के कारण ही इन सभी चीज़ों का अनुभव किया है। उन्होंने इन सभी चीज़ों का अनुभव किया है, फिर भी उन्हें विश्वास में इसे अपनाने में असफल होने का खतरा है। उनके गिरने का भी खतरा रहता है।

इसलिए भले ही लेखक यह नहीं कहता है, मुझे विश्वास है कि वह अभी भी अपने पाठकों की तुलना जंगल की पीढ़ी से कर रहा है। और वह ऐसी भाषा का उपयोग करते हैं जो उनके यहूदी ईसाई पाठकों को उनके पूर्वजों की याद दिलाती होगी। फिर से, मानो कह रहा हो, वही मत करो जो उन्होंने किया।

उन्होंने भी इन सब बातों का अनुभव किया, फिर भी उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया। वे विश्वास करने में असफल रहे। वे दूर जा गिरे और भूमि में न लगे।

क्या आप भी वही काम नहीं करते ? आपने भी इन सभी चीजों का अनुभव किया है, फिर भी परमेश्वर के वादों को अस्वीकार न करें। विश्वास में उत्तर देने से इंकार न करें और उस विश्राम को न चूकें, अपने पूर्वजों की तरह कार्य करके उस मोक्ष को न चूकें।

सही? कोई प्रश्न? फिर, मुझे लगता है कि अन्य सभी, दिलचस्प बात यह है कि मेरे विचार से अन्य सभी चेतावनी अंशों को भी इसी तरह से समझा जाना चाहिए। दिलचस्प बात यह भी है कि अन्य सभी चेतावनी अनुच्छेद वास्तव में उदाहरण के तौर पर पुराने नियम के इज़राइल का उपयोग करते हैं। फिर से, जैसे कि वह अपने पाठकों से बार-बार कह रहा हो, ऐसा न होने दें, एक अर्थ में हम कह सकते हैं, इतिहास को खुद को दोहराने न दें।

उसी तरह से प्रतिक्रिया न करें जैसे इज़राइल ने पुराने नियम में किया था, किसने विश्वास में प्रतिक्रिया देने से इनकार कर दिया, किसने विद्रोह किया, किसने अवज्ञा की। क्या आप भी वैसा ही नहीं करते क्योंकि अब आपके पास कुछ बड़ा है? आप पूर्णता के समय में रहते हैं।

आप ऐसे समय में रहते हैं जहां आने वाला युग मसीह में पूरा हो चुका है। तो, जिस द्वार पर आप प्रवेश करने के लिए खड़े हैं वह पुराने नियम के सत्य से कहीं अधिक महान है क्योंकि अब आप मसीह में पूर्णता के समय में रहते हैं। इसलिए उसे चूकने की गंभीर गलती न करें।

इसके बजाय, आगे बढ़ें और विश्वास के साथ मसीह को गले लगाएँ। यदि आप अपनी पीठ मोड़ेंगे तो आपके पास खोने के लिए सब कुछ है। यदि आप आगे बढ़ते हैं और विश्वास के साथ यीशु मसीह को गले लगाते हैं, तो आपके पास हासिल करने के लिए सब कुछ है, चाहे कोई भी कीमत चुकानी पड़े।

कोई और सवाल? मैं इसके बारे में संक्षेप में बात करना चाहता हूँ, आप देखेंगे कि आपके नोट्स में एक भ्रमण है। कभी-कभी, हम रुकते हैं और जब कोई प्रमुख विषय होता है, तो हम रुकते हैं और दिखाते हैं कि यह पुराने नियम से कैसे विकसित होता है और नए में पूरा होता है। लेकिन इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, इब्रानियों के बारे में कोई अन्य प्रश्न? आपको यह अंदाज़ा हो गया होगा कि इब्रानियों के बारे में क्या है।

वास्तव में, हिब्रूज़ उन पुस्तकों में से एक है जहां कुल मिलाकर यह देखना बहुत आसान है कि लेखक क्या कर रहा है। कठिनाई तब कहां होती है जब आप विवरणों को देखना और उनका पता लगाने का प्रयास करना शुरू करते हैं। यह मलिकिसिदक कौन है? वह दुनिया में कहां से आता है और मसीह मलिकिसिदक से कैसे जुड़ा है? कौन है ये? भजन 110 के अलावा, पुराने नियम में उनका एकमात्र उल्लेख उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों में उत्पत्ति में उनके जीवन का संक्षिप्त रहस्यमय संदर्भ है।

और इब्राहीम के साथ उनकी थोड़ी बातचीत। अन्यथा, आप उसके बारे में कुछ नहीं सुनेंगे। मेरा मतलब है, मलिकिसिदक कौन है? मलिकिसिदक के क्रम में यह पौरोहित्य क्या है? मसीह का



उससे क्या संबंध है? तो, ऐसी कई चीजें हैं जो आपको जीवन भर सोचने और तलाशने में व्यस्त रखने के लिए बहुत सारी चीजें प्रदान करती हैं।

फिर भी, व्यापक स्तर पर, इब्रानियों को पढ़ते हुए, यह बिल्कुल सीधा है कि क्या हो रहा है, पाठकों को क्या करने का खतरा है, और वह उनसे क्या करने की कोशिश कर रहा है। जब आप विवरण भरने का प्रयास करते हैं, तो कभी-कभी चीजें थोड़ी मुश्किल हो जाती हैं। लेकिन कुल मिलाकर, मुझे लगता है कि इब्रानियों का मुख्य जोर, फिर से, यह है कि वह पाठकों को यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि यदि वे मसीह से मुंह मोड़ लेते हैं तो उनके पास खोने के लिए सब कुछ है।

यदि वे उस पर दबाव डालते हैं और विश्वास के साथ उसे गले लगाते हैं तो उनके पास हासिल करने के लिए सब कुछ है। ठीक है। बस भ्रमण शुरू करने के लिए, और वह वाचा है, एक वाचा का विचार, विशेष रूप से नई वाचा, इब्रानियों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

लेकिन वास्तव में इसका एक लंबा इतिहास है जिसका संकेत हम कई बार दे चुके हैं। मेरी राय में, वास्तव में अनुबंध का विचार सृष्टि से ही जुड़ा है। हालाँकि उत्पत्ति 1 और 2 में वाचा शब्द का उपयोग नहीं किया गया है, आदम और हव्वा के साथ परमेश्वर का रिश्ता मूल रूप से एक वाचा का रिश्ता था।

और अनुबंध में संभवतः कई विशेषताएं शामिल हैं, लेकिन कम से कम, इसमें ये तीन विचार शामिल हैं। एक वाचा वह है जहां ईश्वर कार्य करता है, ईश्वर पहल करता है और अपने लोगों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए कार्य करता है जहां वह उन्हें अपने बच्चों या अपने लोगों के रूप में अपनाता है। इसीलिए आपको बाइबल में यह वाक्यांश बार-बार मिलता है, मैं तुम्हारा परमेश्वर बनूँगा, तुम मेरे लोग होगे।

वह वाचा भाषा है। ईश्वर पहल करता है और लोगों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए कार्य करता है, और वह उन्हें अपने लोगों के रूप में अपनाएगा। वे स्वाभाविक रूप से उसके नहीं हैं।

वह उन्हें अपने लोगों के रूप में अपनाएगा। अनुबंध के हिस्से के रूप में, ऐसी शर्तें हैं जिन्हें उस रिश्ते को बनाए रखने के लिए, उस रिश्ते को बनाए रखने के लिए पूरा किया जाना चाहिए। आमतौर पर आज्ञाकारिता छोटे पक्ष की ओर से होती है।

आमतौर पर, फिर से, भगवान किसी ऐसे व्यक्ति के साथ संबंध में प्रवेश करेगा जो उसके अधीन है या किसी निम्न स्थिति में है। भगवान उन्हें लोगों के रूप में अपनाएंगे। और उस रिश्ते को बनाए रखने के लिए, कुछ शर्तें हैं जिनका उन्हें पालन करना होगा।

सो अदन की बाटिका में यह शर्त थी, कि भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तुम न खाना। वह अनुबंध की शर्त थी। इसलिए, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अपने लोगों के रूप में अपनाया, और वह उन्हें आशीर्वाद देगा, लेकिन जवाब में, उन्हें एक अर्थ में, समझौते का पालन करना होगा और अपने अंत को बनाए रखना होगा।

उस रिश्ते को बनाए रखने के लिए, वे अच्छे और बुरे के ज्ञान के इस पेड़ का फल न खाने की परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेंगे। अनुबंधित रिश्ते में उन लोगों से किए गए परमेश्वर के वादे भी शामिल हैं जो अनुबंधित रिश्ते को निभाने में जीवित हैं या असफल रहते हैं। तो, आप इसे इज़राइल के इतिहास में देखते हैं जब भगवान कहते हैं, यदि तुम कानून का पालन करोगे, तो मैं तुम्हें आशीर्वाद दूंगा।

यदि तुम असफल होगे तो मैं तुम्हें श्राप दूंगा। और फिर, आदम और हव्वा के संदर्भ में, उन्हें परिणाम भुगतने पड़े। वाचा का पालन करने में उनकी विफलता के कारण, उन्हें शाप दिया गया और बगीचे से निष्कासित कर दिया गया।

तो, अनुबंध का विचार जिसमें कम से कम ये तीन चीजें शामिल हैं, और उन्हें वाक्यांशित करने और उन्हें समझने के बेहतर तरीके हो सकते हैं, लेकिन भगवान का एक रिश्ते में प्रवेश करने, एक रिश्ता स्थापित करने का विचार, जिसके तहत वह लोगों को अपने रूप में अपनाता है, वह वाचा की शर्तों के प्रति उनकी आज्ञाकारिता के आधार पर उन्हें आशीर्वाद देने या शाप देने का वादा करता है। अब, बहुत अधिक विस्तार में जाने के बिना, आप पाते हैं कि यह वाचा जो परमेश्वर अपने लोगों के साथ बनाता और स्थापित करता है, वह इब्राहीम के साथ सुदृढ़ या दोहराई जाती है, जो वाचा परमेश्वर इब्राहीम के साथ बनाता है, वह वाचा वह दाऊद के साथ बनाता है, जहां वह वादा करता है, मैं करूंगा तुम्हारे पिता बनो, तुम मेरे पुत्र बनोगे, लेकिन साथ ही वह वाचा भी जो भगवान अंततः मूसा के साथ बनाते हैं, जहां, फिर से, स्पष्ट रूप से विचार यह है कि कानून का पालन करना प्राथमिक शर्त है, और भगवान उन्हें आशीर्वाद देंगे या उन्हें शाप देंगे, अंतिम, इस पर आधारित कि क्या वे कानून का पालन करते हुए प्रतिक्रिया देते हैं। अब, यह सब उस रास्ते की ओर ले जाता है जिससे कि वाचा, जिस तरह से वाचा अंततः पूरी होगी, जिस तरह से मानवता के साथ एक वाचा के रिश्ते में प्रवेश करने का भगवान का इरादा अंततः एक नई वाचा के वादे के माध्यम से पूरा होगा।

उदाहरण के लिए, यिर्मयाह में, यिर्मयाह अध्याय 31, और यहजकेल अध्याय 36 और 37 में, परमेश्वर वादा करता है कि एक दिन वह एक नई वाचा स्थापित करेगा जो उस वाचा के रिश्ते की अंतिम अभिव्यक्ति होगी जिसे वह अपने लोगों के साथ दर्ज करना चाहता है। विशेष रूप से क्योंकि इज़राइल पुरानी वाचा के तहत विफल रहा, भगवान अब एक नई वाचा की शुरुआत और उद्घाटन करेंगे जहां वह अपने लोगों के साथ संबंध स्थापित करेंगे और उन्हें अपनाएंगे क्योंकि उनके लोग उनके लिए प्रावधान करेंगे, और उन्हें आशीर्वाद देने के लिए कार्य करेंगे। इसलिए, परमेश्वर एक नई वाचा बनाएगा जैसा कि यिर्मयाह अध्याय 31 में वादा किया गया है, लेकिन यहजकेल अध्याय 36 और 37 में भी, और मुझे लगता है कि पुराने नियम में कई अन्य स्थानों पर भी।

अब नए नियम में क्या होता है, विशेष रूप से इब्रानियों में, नए नियम के लेखक आश्वस्त हैं कि अब यीशु मसीह के आगमन के साथ, नई वाचा का उद्धार, नई वाचा की व्यवस्था का उद्घाटन अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में हो गया है। और जिस तरह से इसका उद्घाटन किया गया है उसे पहले से ही लेकिन अभी तक नहीं के संदर्भ में भी समझा जाना चाहिए। भविष्य में इसकी अंतिम और अंतिम पूर्ति से पहले ही इसका उद्घाटन किया जा चुका है।

और हम वास्तव में अगले सोमवार को उस पर थोड़ा और गौर करेंगे। शुक्रवार को परीक्षा है। लेकिन सोमवार को हम वाचा पर विचार करेंगे और फिर जेम्स की पुस्तक की ओर भी बढ़ेंगे।

यह न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं, इब्रानियों की पुस्तक पर व्याख्यान 28।